CCRH Quarterly Bulletin
Vol. 21(1 & 2). 1999

भारतीय तथा कम प्रचलित औषधियों का सामान्य रोगों में सत्यापन*

पी॰ सिंह[1]

१. वायरल ज्वर (Viral Fever)

(क) कैसिया सोफेरा

शीत के साथ आंतरिक ज्वर तथा शरीर में अत्यधिक दर्द, रात्रि के समय तकलीफों का बढ़ जाना आदि लक्षणों में यह लाभप्रद है।

(ख) सिजलपिनिया बान्डुसेला

अविराम ज्वर का शीत के साथ एकाएक तेज हो जाना साथ ही सारे शरीर, माथे में अत्यधिक पीड़ा। गर्म अवस्था के समय रोगी को प्यास की अधिक अच्छा होना। ज्वर का प्रातः १० बजे के लगभग तेज हो जाना।

(ग) टिला अरेनिया

अत्यधिक शीत के साथ ज्वर का प्रकट होना। शरीर में दर्द, जुकाम, रात्रि में बेचैनी तथा नींद का न आना।

(घ) टेरेन्टुला हिस्पैनिका

ज्वर के साथ सर के अग्रभाग (ललाट) व शरीर में दर्द तथा ठंड लगकर ज्वर का आना। साथ ही रोगी को अधिक प्यास लगना। खांसी, जुकाम, कब्ज तथा रात्रि के समय इनका प्रबल हो जाना।

(ङ) अजैदिरेक्ता इन्डिका

ज्वर का सायं ३ से ६ के बीच शीत के साथ प्रकट होना, सर्दी, जुकाम के साथ सारे शरीर में दर्द तथा बेचैनी व प्यास न लगना।

(च) ईगल फोलिया

इस औषधि में ज्वर के साथ शरीर में दर्द, माथे में भारीपन तथा दर्द बना रहता है। मुख में खुश्की होती है, ज्वर के साथ जुकाम, छीकें होती हैं किन्तु इसमें ज्वर के साथ रोगी को ठंड महसूस नहीं होती है। इसकी तकलीफें ज्यादातर संध्या या रात्रि के समय बढ़ जाती हैं। उपरोक्त लक्षणों के साथ रोगी में खांसी के लक्षण भी विद्यमान होते हैं।

(छ) नैक्टेन्थिस आर्बरट्रिस्टिस

इसमें पित्त का प्रकोप प्रधान होता है तथा ज्वर ठंड के साथ आता है कभी ज्वर के साथ ठंड नहीं भी होती है। किन्तु मिचली व कै की शिकायत काफी होती है। जिससे

---

1. सहा॰ अनु॰ अधि॰ (होम्यौ॰) केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

* गतांक (Quarterly Bulletin 20 (3 & 4) 1998) से आगे।

रोगी परेशान होकर थकान व सुस्ती महसूस करता है। कभी–कभी इन लक्षणों के साथ दस्त के लक्षण भी पाये जाते हैं। इस औषधि की सारी तकलीफें मुख्यतः रात्रि में अधिक होती हैं या बढ़ जाती हैं।

(ज) एलस्टोनिया कानस्ट्रीक्टा

इसमें ज्वर के साथ–साथ लगभग सभी रोगियों में दस्त के लक्षण प्रधान पाये जाते हैं साथ ही इसमें ठंड बार–बार लगती है व रोगी के शरीर व माथे में दर्द तथा कमजोरी बनी रहती है।

(झ) एन्डरसोनिया

इसमें ज्वर के साथ रोगी के माथे में दर्द, शरीर दर्द, चक्कर आंखों में जलन, स्वाद में कड़वापन आदि लक्षण पाये जाते हैं। इसका रोगी खुली हवा में अपने को अच्छा महसूस करता है तथा ठंडी हवा से उसकी तकलीफों में आराम मिलता है।

(ञ) सिसलपिनिया वान्डुसेला

इसमें ज्वर के साथ रोगी के सर में तेज दर्द होता है जो दबाने से कम हो जाता है। शरीर दर्द, कब्ज, मल कड़ा तथा खुश्क होता है। ज्वर समाप्त हो जाने के पश्चात् रोगी को अत्यधिक कमजोरी महसूस होती है।

२. श्वासनली प्रदाह

(क) ईगल फोलिया

खांसी सर्दी के साथ नाक से पतला पानी आना, छीकें, शरीर का तापक्रम बढ़ जाना (ज्वर)। जाड़े में इनका प्रकोप ज्यादा पाया जाना।

(ख) कैसिया सोफेरा

खांसी के साथ थोड़ा सफेद रंग का बलगम जो कभी–कभी परिवर्तित होकर पीले रंग का हो जाता है। खांसते समय रोगी के छाती में दर्द, इसके साथ ही रोगी को सर्दी, ज्वर तथा शरीर में दर्द हो जाता है यह तकलीफें सुबह के समय विशेष बढ़ जाती है।

(ग) कालीम्युरियाटिकम

खांसी ज्वर के साथ थोड़ा कड़ा बलगम, (जिसका रंग परिवर्तित होकर कभी–कभी पीला हो जाता है), का आना, छाती में दर्द तथा घडाघड़ाहट का शब्द सुनाई पड़ना, श्वांस, कष्ट आदि। इसमें रोगी को कब्ज तथा जीभ पर सफेद लेप चढ़ा रहता है आदि लक्षणों पर इसमें विशेष लाभ मिलता है।

(घ) जस्टीसिया अधटोड़ा

यह इस बीमारी की अचूक दवा है। इसमें खांसी रात्रि के समय तथा कमरे के अन्दर बढ़ जाती है, श्वांस लेने में खिंचाव घडघड़ाहट, जुकाम तथा ज्वर रोगी को बना रहता है।

३. संक्रामक चर्मरोग

(क) ईगल मारमेलस

इसमें उद्‌भेद लाल रंग के खुश्क होते हैं तथा इसकी तकलीफ सूर्य की गर्मी से बढ़ती तथा ठंड से कम हो जाती है साथ ही कब्ज की शिकायत रोगी को बनी रहती है।

(ख) अजैदिरेक्ता इण्डिका

इसमें रोगी के चर्म पर खुजलाने के बाद लाल रंग के खुश्क उद्‌भेद प्रकट हो जाते हैं, जो मुख्यतः छाती, हाथों तथा

जांघों के ऊपर पाये जाते हैं। यह तकलीफें मुख्यतः संध्या के समय तथा कपड़ा बदलते समय उत्पन्न होती हैं।

(ग) एन्थ्राकोकिली

भयंकर खुजलाहट के साथ लाल रंग के दानों (उद्‌भेद) का शरीर के ऊपर प्रकट हो जाना तथा खुजलाने के बाद जलन, कभी–कभी खुजलाने के बाद उनसे रक्त का आ जाना। यह तकलीफें मुख्यतः रात्रि व कपड़े बदलते समय उत्पन्न हो जाती है। इसमें दानें (उद्‌भेद) कभी–कभी काले पड़ जाते हैं या उसमें पानी आ जाता है।

(घ) हाइड्रोकोटाइल एशियाटिका

शरीर के चर्म पर लाल रंग के उद्‌भेद, खुजली जो रात्रि के समय बढ़ जाती है।

(ङ) साइनोडान डेक्टईलोन

खाज के साथ हाथ पैरों पर छोटे–छोटे दाने निकल आते हैं जो खुजलाने के बाद बढ़ जाते हैं।

(च) बैसिलिनम

यह खाज की अचूक दवा है। इसके दाने उभरे गोलाकार व तांबे के रंग के समान होते हैं तथा उसमें खुजलाहट होती रहती है। रोगी के परिवार में या रोगी को क्षय रोग का इतिहास होने पर यह और भी अच्छा कार्य करती है। कभी–कभी बाहरी दाद जो बाहरी दवाओं जैसे–मलहम व अंग्रेजी औषधियों से दबा दिये जाते हैं इस दवा के प्रयोग से दुवारा उत्पन्न हो जाते हैं।

४. वात रोग

(क) अजैदिरेक्ता इंडिका

इस औषधि में शरीर के सभी जोड़ों में दर्द होता है। विशेषकर घुटनों के जोड़ो में दर्द तथा सुजन आ जाती है जो रात्रि के समय बढ़ जाती है।

(ख) आर्स. सल्फ. फ्लेवम

पैर के घुटनों में दर्द सूजन व अकड़न जो सीढ़ी चढ़ने तथा पहला कदम आगे रखते ही बढ़ जाता है।

(ग) वेन्जोइक एसिड

इसमें पैर के घुटनों में सूजन, दर्द बना रहता है जो चलने फिरने से बढ़ता है तथा इसमें एक तरह की कट–कट की ध्वनि भी होती है। किसी–किसी रोगी के पेशाब में तीखी बदबू भी आती है।

(घ) जैकेरेन्दा

शरीर के सभी जोड़ो में दर्द, सूजन व कड़ापन होता है जो सुबह के समय ज्यादातर कष्टदायक होता है तथा दर्द हरकत से बढ़ जाता है।

(ङ) लैक केनाइनम

शरीर के सभी बड़ी संधियों में दर्द जो परिवर्तनशील होता है। यह दर्द ठंड तथा शारीरिक गति से विशेष बढ़ जाता है।

(च) विस्कम एल्बम

सन्धियों में दर्द, दर्द का स्वभाव, चुभन, फटने व भोंकने की तरह होता है। इस औषधि का दर्द रात्रि के समय, ठंड तथा घूमने–फिरने से बढ़ जाता है। कभी–कभी इन लक्षणों के साथ रोगी को चक्कर की भी शिकायत होती है।

५. चक्षुप्रदाह

(क) ईगल फोलिया

आंख के श्वेत पटल में लाली, सूजन तथा दर्द होता है। दर्द इस प्रकार का होता है कि रोगी महसूस करता है अन्दर कोई चीज (बालू के कण) पड़ गये हों। आंखों के सामने रोशनी सहन नहीं हो पाती है। आंख दर्द में ठंडे पानी से धोने से रोगी को आराम मिलता है।

(ख) साराका इंडिका

इस औषधि में भी श्वेत पटल में लाली तथा सूजन होती है और रोगी रोशनी सहन नहीं कर पाता है। इसमें आंखों से अत्यधिक पानी आता है तथा आंख सुबह स्राव से चिपक जाती हैं।